अनकहे जज्बातों की एक मुकम्मल दास्ताँ,
जहाँ शब्द खत्म होते हैं और एहसास शुरू।

अनवरी

अनुजा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Anuja 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-496-3

Cover design: Sharvi Singh
Typesetting: Sagar

First Edition: July 2026

अनुक्रमणिका

दोस्ती का दामन 1
जिन्दगी का सफर 2
दुख 3
खुशी 4
मेरी माँ 5
दूर है पर पास है 6
वो कौन है 7
प्यार होता है 8
आज बोल दो 10
नसीब हुए 11
हमें तो जिद्द है 12
वक्त 14
समझ 15
भागमभाग 16
जिंदगी क्या है 17
दिल खोल कर 18
पंछी 19
सिलसिला 20
कैसे सस्ती है 21
अम्बर 22
नहीं थे 23
पतझड़ 24

हमारे जमाने की दोस्ती 25
मन का रावण 26
मेरे शिक्षक 27
ज़ंजीर 29
मैं खुद के जैसा हूँ 30
हैवान 31
आदमी 32
तुमने कभी देखा है 33
बेटी अपनाओ 34
अधूरे ख़्वाब 35
नवरात्रे क्यों मनाते हैं 36
औरत औरत का साथ निभा 38
आज की माँ 40
हिंदी ही हिंदुस्तान 41

दोस्ती का दामन

हमने दोस्ती का हाथ बढ़ाया
पर उसने हाथ पीछे हटाया
उन्होंने हमसे मुँह मोड़ा
पर हमने उनका दामन न छोड़ा
हमने दोस्ती करनी चाही
पर उन्होंने हमसे करी बेवफाई
हमने दीवार गिरानी चाही
पर उन्होंने बात और बढाई
हम उनसे दूर जाना नहीं चाहते
पर वो कहीं आना नहीं चाहते
वह हमारा दोस्त है दुश्मन नहीं हुआ
पर उन पर हमारी बातों का असर नहीं हुआ
हमें दूर तक अन्धेरा नजर आता है
पर हमारी मंजिल पर एक दिया जगमगाता है ।

जिन्दगी का सफर

जिन्दगी का सफर बहुत अजीब होता है
कोई सब कुछ पाकर भी गरीब होता है
सबका अपना-अपना नसीब होता है
किसी के अपने बहुत दूर होते हैं,
किसी का अपना करीब होता है
इस सफर में हमें कभी खुशियाँ मिलती हैं
कभी काँटे चुभते हैं, कभी कलियाँ खिलती हैं
कभी दुख पहाड़ बन सामने खड़ा होता है
जो कभी खुश था, वो कभी-कभी रोता है
कभी खुशियों से जिन्दगी भर जाती है
दुख की आवाज आते ही जिन्दगी डर जाती है
कभी दुख अपना मुँह हल्के से खोलता है
और चुप रहकर भी हमसे ये बोलता है
मैं तुम्हारी शक्ति का इम्तेहान लेने आया है
और खुशियों के रूप में ईनाम देने आया हूँ ।

दुख

दुख तो है इक गहरा सागर
कूद जा दम है अगर
तैर पाया तो तेरा नसीब
डूब गया तो तेरा मुकद्दर
दुख तो है नीला आसमान
ढूँढ ले इसमें अपने अरमान
मिल गये तो तू बाजीगर है
न मिले तो है तू अन्जान
दुख तो है काली पर छाई
जो हर मोड़ पर डराने आई
डर गया तो तू कायर है
न डरा तो है तू सिपाही
दुख तो है सुखों का रास्ता
हमेशा रख इसी पर आस्था
सुख मिलेंगे इसी रास्ते पर
न मिले तो है तेरी अविश्वासता ।

ख़ुशी

कभी रास्ते पर गिरी मिली
कभी जन्नत की परी लगी
कभी अरमानों की नदी लगी
ख़ुशी तू क्या लगी, क्या न लगी ?

कभी फूलों का गुलदस्ता लगी
कभी ऊँचाईयों का रस्ता लगी
कभी दुखों का कोई रिश्ता लगी
ऐ ख़ुशी तू क्या लगी, क्या न लगी ?
कभी उड़ती हुई पतंग लगी
कभी सच्चे सात रंग लगी
कभी जीती हुई जंग लगी
ऐ ख़ुशी तू क्या लगी, क्या न लगी ?
किस तरह सबको समझाऊं तू क्या लगी
मुझको तो बस भगवान की दया लगी ।

मेरी माँ

जो हर कदम पर मुस्कुराती रही
जो हर दम गले से लगाती रही
अपना हर गम मुझसे छुपाती रही
स्वयं जागकर मुझको सुलाती रही
मुसीबतों का सामना करती रही जो
जिन्दगी की सीढ़ी चढ़ती रही जो
दुःखों और गमों से लड़ती रही जो
मुझे खुश देखकर आगे बढ़ती रही जो
जो इस दुनिया में मुझे लाई
जिसने सिखाई मुझे अच्छाई
जिसने मेरी हर चोट सहलाई
जिसकी हर बात में छुपी है भली
जिसने दिया मुझे मेरा नाम
जिसने सिखाई मुझे मेरी जुबान
ना जाने कितने और थे उसके अरमान
नहीं छोड़ा उसने अपना ईमान
पूछो मुझसे वो मेरी क्या है ?
जीवन का अमृत या मीठी दवा है ?
पीपल की छाँव या ठण्डी हवा है ?
दामन में जिसके उम्मीदों का कारवां है
मेरे लिए सारी धरती आसमा है
वो और कोई नहीं मेरी ही माँ है ।

दूर है पर पास है

जो मिला नहीं मुझे
बस उसकी चाह है
जो मिल गया मुझे
उसके लिए आह है
सारी खुशियाँ पाकर भी
कुछ दर्द सा रहता है
हर दम धूप में आकर भी
मन सर्द सा रहता है
पा लेने पर सब कुछ भी
कुछ छूट गया मुझसे
ऐसा क्यों लगता है
कोई रूठ गया मुझसे
मुझको लगता है ये दुनिया का दस्तुर
जो जितना है प्यारा, वो उतना है दूर
लोग कहते हैं दूरियाँ प्यार बढ़ाती
मुझको लगता है वो नजदीक ले आती है
चाँद भी तो धरती से कितना दूर है
फिर भी वो धरती के मन का मयूर है
जो दूर है हमसे
वो पास होंगे हर क्षण
अगर उनका प्यारा सा
आशियाना है हमारा मन ।

वो कौन है

जिसकी आँखों में प्यार है
जिसके होठों पर इन्कार है
जिसके गुस्से में तकरार है
पूछो मुझसे वो कौन है ?
जिसकी सूरत सबसे भोली है
जिसकी बातों में ठिठोली है
जिस ने इक मिठास सी घोली है
पूछो मुझसे वो कौन है ?
जिसका हटके सा अन्दाज है
जिसका प्यारा सा एहसास है
जिसकी मीठी सी आवाज है
पूछो मुझसे वो कौन है ?
मुझसे रहता हरदम दूर है
मेरी आँखों का वो नूर है
जिसको थोड़ा सा गरूर है
पूछो मुझसे वो कौन है ?
जिसकी हर हार भी जीत है
जिसका हर बोल भी गीत है
जिसका गुस्सा भी प्रीत है
पूछो मुझसे वो कौन है
क्या बोल यू वो कौन है ?
क्या पता वो कौन है ?
वो मुझसे अन्जान है
मैं उससे अन्जान हूँ ।

प्यार होता है

चलते-चलते अचानक
इक चेहरा नजर आता है
दिल खो जाता है
जाने क्या हो जाता है
वो ही चेहरा इक दिन
फिर कहीं मिल जाता है
कोई अपना तुम्हें
उससे मिलवाता है
उसकी आँखों में
तुम्हारा दिल डूब जाता है
उसका मुस्कुराना
तुम्हें उसके पास ले जाता है
पर ये क्या
वो तो फिर कहीं खो जाता है
अन्धेरों में, उजालों में
बस वो ही नजर आता है
नींद उड़ जाती है
कोई याद आता है
इसी कशमकश में
प्यार हो जाता है
पर कौन कहता है
प्यार हो जाता है
किया नहीं जाता है
ये तो सब

उसकी साजिश है
नहीं तो दर्द इतना
किसी को दिया नहीं जाता है ।

आज बोल दो

अगर प्यार करते हो तो बोलते क्यों नहीं
अपने दिल का राज तुम खोलते क्यों नहीं

अगर आँखों में छुपाया है तो दिखाते क्यों नहीं
हमारी अहमियत हमें बताते क्यों नहीं

अगर होठों पर नाम है तो लेते क्यों नहीं
हमें कोई प्यारा सा नाम देते क्यों नहीं

अगर गीत कोई है तो सुनाते क्यों नहीं
हमारे लिए गज़ल कोई बनाते क्यों नहीं

अगर पलके बोझल भी हो तो सोते क्यों नहीं
हमारे ख्वाबों को तुम पिरोते क्यों नहीं

अगर शाम का इन्तजार है तो वो आती क्यों नहीं
ये सूरज की रोशनी कभी जाती क्यों नहीं

अगर सुबह का इन्तजार है तो रात ढलती क्यों नहीं
ये काली रात सुबह में बदलती क्यों नहीं

अगर जवाब मेरा चाहिए तो माँगते क्यों नहीं
मेरे दिल के अन्दर तुम झाँकते क्यों नहीं

अगर साथ मेरा चाहिए तो राज़ खोल दो
अगर हाथ मेरा चाहिए तो आज बोल दो ।

नसीब हुए

आज तुम हमारे साथ हो
तो जहान हमारा लगता है
हर शख्स आज हमें यहाँ
कितना प्यारा लगता है
कल तुम हमारे पास थे
पर कितनी दूर थे
पर तुम्हारे दिल में हम
कहीं छिपे जरूर थे
इन्कार के डर से
तुम हमें बता न सके
पर कम्बख्त तुम्हारे नैन
कुछ छुपा न सके
तुम अपने ही अंदाज में
हमें लुभाते रहे
पर हम नासमझ उसे
दोस्ती मान अपनाते रहे
न तुमने कभी बोला
न हमें एहसास हुआ
न जाने कब ये रिश्ता
इतना खास हुआ
न जाने कब तुम
हमारी जिंदगी में शरीक हुए
हाथों की लकीरें बदल गई
और तुम हमें नसीब हुए ।

हमें तो जिद्द है

हमे तो जिद्द है सबसे बात करने की
पर कुछ खास लोग ही उन्हें पसन्त पसंद आते है

हमें तो जिद्द है सारी दुनिया देखने की
पर कुछ खास जगह ही उनके मन भाती है

हमें तो जिद्द है आँखों में डूब जाने की
पर कुछ देर ही वो आँखों में झाँक पाते हैं

हमें तो जिद्द है हर महफिल जमाने की
पर महफिल में आने से वो जाने क्यों कतराते हैं

हमें तो जिद्द है हर दम हँसते रहने की
पर न जाने वो क्यों मुस्कान पर ठहर जाते हैं

हमें तो जिद्द है उनके आगोश में जाने की
पर वो तो छू कर ही लौट जाते हैं

हमें तो जिद्द है हम हर अरमां बयान करें
पर हमारी दिल की बात वो सुन नहीं पाते हैं

हमें तो जिद्द है उनके घर में बस जाने की
पर वो तो दहलीज से ही लौटा लाते हैं

हमें तो जिद्द है आसमां समेटने की
पर वो तो चाँद पर ही ठहर जाते हैं

हमें तो जिद्द है उनके लिए मौत चूम ले
पर वो तो जिन्दगी पर ही ठहर जाते हैं ।

वक्त

कब कोई कुछ बोल पाया है
इस जिन्दगी के आगे
जितना थामो इस वक्त को
ये उतनी दूर भागे
मिलने को सूरज की किरण से
चाँद सारी रात जागे
पर वक्त ही तो है
जो चाँद को ले भागे
आकाश की चाह में
बैठी है ये धरा
उसे वक्त कहाँ धरा के लिए
दामन उसका सितारों ने है भरा
तितली इन फूलों की
बिल्कुल दी दिवानी है
पर बैठी तब तक है
जब तक उनकी ये जवानी है
जिन्दगी के पन्नों में
जब-जब हम चलते हैं
जाने कितने सपने
इस दिल में पलते हैं
कुछ सपने उनमें से
हो जाते हैं अपने
और कुछ अरमां जीवन के
हो जाते हैं सपने ।

समझ

वो नासमझ मुझे समझाता बहुत है
उसका हर खेल मुझे समझ आता बहुत है
वो समझता है जो बोलेगा मैं सच मान लूँगी
सच मान तो लूँगी साथ ही सब झूठ जान लूँगी
बचकानी बातें करती हूँ उससे मैं अक्सर
पर बच्ची नहीं हूँ, मैं उसकी रग पहचान लूँगी
प्यार का खेल है तो प्यार से खेलो
शतरंज़ खेलोगे तो मैं भी जान लूँगी
मत बिछा मुझसे जीतने के लिए बिसात
तू बस प्यार से कह दे, मैं हार मान लूँगी
फ़ैसला न तेरा होगा, न मेरा होगा
बस अपनी ज़ुबा पे रहना उसपे जान दूँगी ।

भागमभाग

कहाँ भाग रहे हैं सब
कभी अपनों के लिए
कभी सपनों के लिए
कभी सपनों में खोये अपनों के लिए
कभी अपनों में खोये सपनों के लिए
अपनों को मनाते हुए कभी सपने टूट गए
सपनों को पिरोते हुए कभी अपने रूठ गए
क्यों रूठ जाते हैं ये क्यों टूट जाते हैं
ये सपने ही तो हमें जीने की राह दिखाते हैं
पूरा न भी हुआ तो क्या
ये अपने साथ-साथ हमें कहीं तो पहुँचाते हैं
जब पूरा करने निकला था
कुछ लोग थे जो मेरे साथ खड़े थे
जिनके साथ होने से ही
मेरे हौसलें इतने बड़े थे
जो आज पूरा न हुआ
वो कभी तो पूरा होगा
यूँ ही नहीं मेरा हर सपना अधूरा होगा ।

जिंदगी क्या है

जिंदगी क्या है
जीत और हार का पुलिन्दा है
माना कि हार ज्यादा है
जीत थोड़ी चुनिंदा है
उस हार से न हार
वो तेरा जज़्बा ही है
जो तुझमें ज़िंदा है
जो आज हार-जीत की सोचता है
कल फ़ुर्र से उड़ जाएगा
इंसान वो परिंदा है
आते-जाते जीत लो जितने दिल मिले
इंसान प्यार की बस्ती का बाशिंदा है
जो दिल जीत ले, वही सच्ची जीत है
वरना तो जीत से भी जीत शर्मिंदा है

दिल खोल कर

कभी बेवज़ह कॉल किया करो
कभी किसी से बोल लिया करो
कभी किसी की बातें सुना करो
कभी साथ में सपने बुना करो
कभी किसी को पास बुलाया करो
कभी अपना हाथ बढ़ाया करो
कभी किसी के आँसू पोछा करो
कभी औरों के ग़म को सोचा करो
कभी रौशनी की किरण बना करो
कभी बेवज़ह हँसना चुना करो
कभी ग़म तेरा, कभी ग़म मेरा
कभी अपने दिल की बोला करो
कभी दरवाजे बंद, कभी खिड़कियाँ
कभी अपने दिल के दरवाजे खोला करो
बेवज़ह है तो बेवज़ह ही सही
कभी किसी से वास्ता रखा करो
तन्हाई पसंद है खुद को जुदा न करो
दिल तक पहुँचने का रास्ता रखा करो।

पंछी

आकाश में उड़ता पंछी
कितना अच्छा लगता है
हम सोचते हैं वो हर पल
खुश रह पाता है
पर पूछो उस पंछी से
क्या वो ख़ुश रह पाता है
तिनका-तिनका जोड़कर
अपने घर को बनाता है
इक हवा का झोंका आता है
और सब उड़ जाता है
वो पंछी सोचता है
इंसा ख़ुश रह पाता है
वो अपने दिल की बात
सबसे कह पाता है
पर वो क्या जाने इंसा
दिल की बात
दिल में ही छुपाता है
तन्हाई में बैठकर
बस आंसू ही बहाता है ।

सिलसिला

हर बात पे बात बनाते हो
इतनी बातें कहाँ से लाते हो

नज़र से नज़र मिलाते हो
मुझे नज़र क्यों लगाते हो

ये सिलसिला सिर्फ मुझसे है
या हर एक को देख मुस्कुराते हो

ये ताना-बाना सिर्फ मुझसे है
या हर एक से नज़र मिलाते हो

पास रहकर तो छू लेते हो
दूर से हवा बन बालों को सहलाते हो

ये प्यार का एहसास बस मुझसे है
या हर एक कि ज़ुल्फ़ें सुलझाते हो ।

कैसे सस्ती है

न जाने कैसे बाशिंदों की,
ये कैसी बस्ती है
लाख ग़म छुपा कर भी
तू कैसे हँसती है

घर कभी बाबुल का
कभी पिया का है
किसी का घर बसाती
किसी के घर में बसती है

अंदर से टूटी-फूटी सी
खुद से रुठी-रुठी सी
सज संवर कर
तू कितना जंचती है

सब तरफ है
महंगाई बढ़ने के चर्चे
जब सब कुछ महंगा है
तेरी अस्मत कैसे सस्ती है ।

अम्बर

एक परिंदा बड़ा नादां था
पिंजरा उसको घर लगता था
बाहर की दुनिया से अंजान था
वहाँ खोने से डर लगता था
दाना-पानी खाता था
मालिक का गाना गाता था
आँखें बंद कर लेता था
जब खतरा से लहराता था
इक भला शख्स आया
पिंज़रे का ताला खोल दिया
परिंदे को आसमां दिखाया
और दूर उड़ने को बोल दिया
वो डरता था अभी दुनिया से
ज्यादा दूर नहीं उड़ पाता था
थोड़ी दूरी पर जाता था
फिर लौट कर आता था
इक उड़ते-उड़ते उसको
जाने क्या एहसास हुआ
जब देखा उसने जमीं को
तो पंखों पे विश्वास हुआ
फिर उड़ान भरी इक लंबी सी
पूरे आसमां को घूमने लगा
बस एक नीले टुकड़े पे घूमता था
पर पूरे अम्बर को चूमने लगा ।

नहीं थे

जो टूट कर गिर गए
वो सितारे बेवफ़ा नहीं थे
ख्वाहिश किसी की पूरी हो
इसलिए अब आसमां में नहीं थे
जो थाम लेता उसको हर दम
ऐसे हाथ इस जहां में नहीं थे
जीत कर मिल जाता उसे सब
ऐसे जिंदगी इम्तेहां नहीं थे
बदले में न मांगे जो कुछ भी
ऐसे शख्स भी मेहरबां नहीं थे
कह गये अब वो बात नहीं तुममें
आदतों से पहले भी तो अंजान नहीं थे
पास हो कर भी दूर से थे
अब वो लम्हे जो दरमियां नहीं थे ।

पतझड़

शाख से पत्ते कब अलग होना चाह रहे हैं
हवा ही कुछ ऐसी है कि गिर जा रहे हैं
मज़बूती से संभाले हुए थे जो रिश्ते
लगता है हाथों से फ़िसलते जा रहे हैं
पत्ते तो नादां थे जो हवा संग उड़ गए
कुसूर तो शाख का जो पकड़ छोड़े जा रहे हैं
अब तक तो सूरज की हर किरण बोल रही थी
मिज़ाज़ बदला है अब बादल से घेरे जा रहे हैं
रात उड़ कर पहुँच गया किसी आशियाने में
सुबह हुई तो झाड़ू से खदेड़े जा रहे हैं
कहीं कोने में पड़ा है, कुछ अंजानों के साथ
यूँ ही उजड़ते कुछ बसेरे जा रहे हैं
रोक लो पतझड़ को गुज़ारिश है मेरी
इस पतझड़ में कितने ही मेरे जा रहे हैं ।

हमारे जमाने की दोस्ती

व्हाट्सएप फेसबुक के ज़माने से
वो ज़माना अच्छा था
जब दोस्ती मिलकर होती थी
लड़ाई छुट्टी में मिलकर होती थी
न फ्रेंड रिक्वेस्ट के झमेले थे
न ब्लॉक हो कर हम अकेले थे
फोन इंडेक्स में नंबर लिखते थे
स्लैम बुक और डायरी बिकते थे
दोस्तों को फोन में नहीं ढूंढते थे
न ही गूगल से बातें पूछते थे
टीचर की एक्टिंग करते थे
प्यार में ओवर एक्टिंग करते थे
न टिक टोक पे वीडियो बनता था
न इंस्टाग्राम ही जमता था
दिल की बात मुँह पर होती थी
तब बस मुलाकात होती थी
न ट्विटर पर लड़ाई होती थी
न ही कहीं डेट पे मिलाई होती थी
सोशलली कनेक्टेड नहीं थे
फिर भी बहुत दोस्त थे हमारे
अब दोस्ती भी चल रही है
सोशल मीडिया की बैसाखियों के सहारे ।

मन का रावण

जब सोचते हैं बुरा किसी का
तब मन में रावण होता है
जब काम बिगाड़े किसी का
तब मन में रावण होता है
जब दोस्त से करें धोखा
तब मन में रावण होता है
जब रास्ता लड़की का रोका
तब मन में रावण होता है
जब किसी के काम न आये
तब मन में रावण होता है
जब किसी को भड़काए
तब मन में रावण होता है
जब सच के साथ न बोले
तब मन में रावण होता है
जब झूठ के रंग को घोले
तब मन में रावण होता है
इस रावण को तो मार दोगे
जिसके दस दिमाग़, दस सर हैं
उस रावण को कब मारोगे
जिस सर में दस रावण का घर है
जब उस रावण को मारोगे
इक नया सवेरा होगा
मन के रावण को मारो
हर रोज़ दशहरा होगा ।

मेरे शिक्षक

मैं तो इंसां ही पैदा हुआ था
मैं तो नादां ही पैदा हुआ था
न खुद ka पता था, न लक्ष्य था
मैं तो अंजान ही पैदा हुआ था
हौले-हौले मैंने बोलना जो सीखा
स्कूल का समझो कट गया फीता
अम्मा-बाबा मुझे स्कूल छोड़ आये
मैं कितना रोई पर वो मुस्कुराये
पर तभी उंगली मेरी किसी ने थामी
मैं बोली नहीं पर हुई कुछ हैरानी
अंदर का नजारा तो बिल्कुल जुदा था
जो वो बोल रहे थे, मैंने कभी नहीं सुना था
वो शिक्षक थी मेरी, सिखाएं जा रही थी
पर मैं आंसू की नदियां बहाये जा रही थी
रोज का जैसे यह दस्तूर बन गया था
अब मेरा स्कूल था वो न कुछ अब नया था
मैं अपनी टीचर को माँ की परछाई मानने लगी
वो भी मुझको खूब पहचानने लगी
कभी मारा, कभी डाँटा, कभी खूब दुलार किया
उसने मुझे मेरी माँ से ज्यादा प्यार किया
उसने मुझे मेरी माँ से ज्यादा प्यार किया
यूँ ही मुझे पग-पग शिक्षक मिलते गए
किसी ने पढ़ना सिखाया, किसी ने जीवन से लड़ना
किसी ने तूफानों से मेरी कश्ती निकाल दी
किसी ने मेरी जिंदगी यूँ ही निहाल की

आज जो भी हूँ, मैं उनकी ही बदौलत हूँ
मेरे शिक्षक ही मेरी सबसे बड़ी दौलत हैं ।

ज़ंजीर

बेड़ी पैर में थी
जंजीरें सोच में
वो बोले औरत में
बहुत शक्ति है
न तोड़ना सीख पायी
न भागना सीख पायी
वो बोले औरत में
बहुत शक्ति है
कभी सोचा न खुद का
औरों का दिल रखती रही
वो बोले औरत में
बहुत शक्ति है
याद दिलाते रहे उसको
कि वो अबला है
वो बोले औरत में
बहुत शक्ति है
हया उसको सिखाई
गलत करते खुद को न आई
वो बोले औरत में
बहुत शक्ति है
बस तुम्हारे लिए ही
दिन भर चहकती है
वो बोले औरत में
बहुत शक्ति है ।

मैं खुद के जैसा हूँ

जब आया इस कायनात में
मुझे बाबा जैसा बोल दिया
हल्का सा रोया ही था
तो चाचा से क्यों तोल दिया
जब हल्के-हल्के हँसता था
उनको बुआ जैसा लगता था
रूठ कर बैठ गया आज
मौसी का भांजा लगता था
कभी मामा जैसी आँखें थी
और माँ जैसी मेरी बातें थी
कभी दादी जैसी नाक है
कभी नानी जैसे बाल हैं
जाने आप लोगों का कैसा
मेरी शख्सियत पर सवाल है
कभी तो आप लोग
बस इतना मान जाओ
मैं सिर्फ खुद के जैसा हूँ
इस बात को जान जाओ
मैं खुद की ही नई पहचान बनाऊँगा
मैं नायाब था, नायाब हूँ
नायाब बनकर दिखाऊँगा ।

हैवान

हैवानों का मज़हब नहीं होता
बस माँस के भूखे होते है
जो बच्ची कल तक हँसती थी
आज याद कर उसको रोते हैं
मासूम सा बचपन था उसका
मासूम ही उसके सवाल थे
जिसने नोंच डाला ज़िस्म उसका
वो शैतान के ही दलाल थे
जब चाचा कहती तुझको
बाप के बराबर का ओहदा था
अभी तो वृक्ष भी न बन पाई थी
माली के घर का पौधा था
नन्हीं जान चिल्लाई होगी तो
लालच तो उसको दिया होगा
अपने घर की औरत का न सोच के ही
इतना घिनौना किया होगा
क्यों उस नन्हीं परी को
तार-तार कर मार दिया
तू खुद को शेर बताता है
क्या मेमने का शिकार किया
हर बच्ची घर की शहज़ादी है
हर बच्ची पर अब रहम करो
कब तक इनकी चमक छीनोगे
अब तो खुद पे शर्म करो ।

आदमी

छोटा था माँ बोली
खिलौना बहन को दे दे, तू बड़ा है
मान गया माँ की बात, लड़का था
जब साईकल चलाते गिरा
बाबा बोले रो मत, तू मर्द है
मान गया बाबा की बात, लड़का था
जब दोस्तों कुछ पैसे जोड़े
सहेली बोली दे दो मुझे तोहफे, तू दोस्त है
मान गया उसकी बात, लड़का था
कपड़े सबके बने दीवाली पे
सब बोले पुराने पहन ले, तू अच्छा है
मान गया सबकी बात, लड़का था
कुछ पैसे कमाए खुद के लिए
बोले शादी पे लगा दो, तू जिम्मेदार है
मान गया ये बात भी, लड़का था
ज़िगर टुकड़ा थी मेरी बिटिया
बोल दे दो इक शहज़ादे को, तू बाबा है
मान गया ये इक और बात, लड़का था
मन मारा मैंने लाखो बार
कई बार दबा दी अपना ख्वाहिश
पर लड़का था न कर पाया दर्द की नुमाईश
मैं लड़का था, मैं लड़का था ।

तुमने कभी देखा है

मैंने अक्सर लोगों को
कुत्तों के लिए बिस्तर लेते देखा है
उस बिस्तर के पास ही
इंसान को बिन चादर सोते देखा है
मैंने अक्सर लोगों को
ठेले पे चाय पीते देखा है
उस ठेले के पास ही
बूढ़े को प्याले धोते देखा है
मैंने अक्सर लोगों को
सुहाग की चूड़ी पहनते देखा है
वहीं खड़ी इक औरत को
बिन चूड़ी झाड़ू लगाते देखा है
मैंने अक्सर लोगों को
रिक्शे पे फोटे खिंचवाते देखा है
उस रिक्शे को खींचते हुए
एक मजबूर बाप को देखा है
मैंने अक्सर लोगों को
पैरों में बिछते देखा है
बस पेट भर सकूँ परिवार का
इसलिए रोज़ बिकते हुए देखा है ।

बेटी अपनाओ

काश चंद पैसों में कुछ रिश्ते मिल जाते
न जाने कितनों के चेहरे खिल जाते
कोई समझाने वाले पिता पाने का ख्वाब है
जिसके पास मेरी हर उलझन का जवाब है
कहीं खुदा माँ को बाज़ार में सजा के रखता
उस माँ के पास मेरे सपने सजा के रखता
एक बड़ी बहन जो मुझसे लड़ती-झगड़ती
पर गिरती जब भी, वो मुझको पकड़ती
एक भाई जो तोड़कर हर तारा ला देता
जहाँ कदम रखती वो, दिया जला देता
वो बेबस पड़ी है आज मंदिर के आगे
काश उसको कोई रिश्तों के मायने बता देता
अनाथों सी जिंदगी जिसको मिली है
काश कोई लड़की होने पर उसको न ठुकराता
लड़की थी ये सोच कर न मंदिर में जलाता
काश उसको अपने घर में ही सजाता ।

अधूरे ख़्वाब

उम्र नहीं इंसान की मजबूरियां बड़ी होती हैं
तभी मुझसे पहले दरवाज़े पर खड़ी होती हैं
घोंट देती हैं मेरी ख्वाहिशों का गला कभी
कभी उम्मीदें अर्श से फर्श पर पड़ी होती हैं
लड़ते-झगड़ते सो जाते हैं
जरूरतें हैं जो सामने खड़ी होती हैं
कभी सोचते हैं कि सुकून मिलेगा
परिवार की आँखें सपनों से भरी होती हैं
जो चार पैसे कमा घर ले जाता हूँ
पैसों की खनक में कोई कमी होती हैं
कभी होली, कभी दिवाली के लिए बिकता रहता हूँ
कीमत मेरी फिर भी न खरी होती हैं
ये मुस्कान बिखेरने की कोशिश तो करता हूँ
फिर भी आँखें तो आँसू से भरी होती हैं
दिल तो है लाखों सपनों से भर दूँ दामन सबका
कोई लक्ष्मण रेखा इसपे भी बनी होती हैं
एक दिन पूरा होगा हर अधूरा ख़्वाब
इसी उम्मीद में मेरी मजबूरियां बाहर खड़ी होती हैं ।

नवरात्रे क्यों मनाते हैं

जब घर में बैठी लक्ष्मी को
एक-एक रुपये के लिए रुलाते हैं
फिर आप ही बोलो न
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं
जो तन से दिखती काली है
उसको सुंदरता से परे हटाते हैं
फिर आप ही बोलो न
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं
जो सरस्वती पढ़ना चाहती है
उसके सपने तोड़ गिराते हैं
फिर आप ही बोलो न
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं
पानी सबको गंगा का चाहिए
और मैली करके चले जाते हैं
फिर आप ही बोलो न
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं
जो मीरा सी भक्ति करती है
उसको दहेज की सूली चढ़ाते हैं
फिर आप ही बोलो न
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं
जो झाँक रही है कोख से
उसको पल भर में मार गिराते हैं
फिर आप ही बोलो न
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं
हर रिश्ते में माँ का रूप है

हम माँ को ही ठेस पहुँचाते हैं
कल वो खुद तुमसे पूछेगी
हम नवरात्रे क्यों मनाते हैं ।

औरत औरत का साथ निभा

जब तुम माँ होती हो
तो कितना प्यार जताती हो
जब तुम बहन होती हो
सुख-दुख में साथ निभाती हो
तुम दादी-नानी बनकर
माँ की डाँट से बचाती हो
और यूँ बेटी बनकर तुम
मेरी ही परछाई बन जाती हो
सहेली बनकर तुम मेरी
मेरी तरह ही इतराती हो
देवरानी जेठानी बस नाम है
तुम सहेली ही तो बन जाती हो
हर रिश्ते में तुम औरत हो
औरत का साथ निभाती हो
फिर ऐसा क्या हो जाता है
इक-दूजे की दुश्मन बन जाती हो
जो हर पल साथ निभाया था
वो भूल कैसे जाती हो
क्यों माँ-बेटी-बहन से ऊपर
अपने अहम को ले जाती हो
ये दुनिया सच बिल्कुल बदल जाएगी
जिस एक औरत दूसरी औरत का
दिल से साथ निभाएगी
अगर दिल से साथ निभाना है
तो अपनी मैं को पीछे छोड़ दो

औरत ही औरत की दुश्मन है
इस भ्रम को आज से तोड़ दो ।

आज की माँ

हर क्रीम पाउडर का पढ़ कर
तब बच्चे को लगाएंगी
खाना भी डॉक्टर से पूछकर
अच्छे से अच्छा खिलाएंगी
जब चलना सीखेगा
तो साथ-साथ चल जाएंगी
अगर बीमार कभी पड़ जाए तो
नर्स क्या डॉक्टर भी बन जाएंगी
स्कूल ले जाना हो या ट्यूशन
वो ड्राइवर भी बन जाएंगी
जब बिटिया बड़ी होगी तो
उसकी स्टाइल आइकॉन बन जाएंगी
खुद सीख-सीख कर
उसको हर काम करना सिखाएंगी
जब चुनेगा वो अपना कैरियर
सब देखभाल कर मुहर लगाएंगी
खुद हँसे या रोएं
उसको हरदम हँसना सिखाएंगी
हाल चाहे जो भी आये
वो उसको लड़ना सिखाएंगी
कहीं पढ़ा था मैंने
जीन्स वाली माँ आँचल कहाँ से लाएगी
ये आज की माँ हैं जनाब
गूगल और यू ट्यूब बच्चों को पढ़ाएगी
जब सब कुछ कर लेती है
तो आँचल का भी हल ढूंढ लाएंगी ।

हिंदी ही हिंदुस्तान

वो भाषा मुझे मेरी माँ ने सिखाई थी
उसमें ही तो उसने लोरी की मिठास मिलाई थी
उसका गुस्सा भी उसी भाषा का था
उसका प्यार भी उसी भाषा का था
मेरी माँ की हिंदी में दुनिया भर का प्यार था
उस भाषा में अपनापन बेशुमार था
वो अंग्रेजी स्कूलों में बुदबुदाती सी हिंदी
पर हर चुटकले पर गुदगुदाती सी हिंदी
सबके सामने शर्म दिलाती सी हिंदी
पर मन की बात को गुनगुनाती सी हिंदी
पिछड़ेपन का एहसास दिलाती सी हिंदी
पर सबके चेहरे पर मुस्कुराती सी हिंदी
पुराने ज़माने में कहीं छुटी सी हिंदी
आज के बच्चो की टूटी-फूटी सी हिंदी
वो मेरी भाषा कहीं तो बेबस पड़ी है
अंग्रेजी के पीछे सर झुकाये खड़ी है
हिंदी ही तो हिंदुस्तान की जान है
पर अपनी भाषा से भी हम बनते अनजान हैं
हिंदी से प्यार हिंदुस्तान से प्यार है
आज भी भाषा में मिठास बरकरार है
हिंदी बोलो, हिंदी सुनो, हिंदी गाओ
यही हमारी पहली भाषा है, इसे दिल से अपनाओ ।